

पद २६६

(राग: खमाज - ताल: धुमाळी)

तकड़ धिंऽतकड़ मृदंग बजावे । नाचत गोपीबाला रे ॥ध्रु.॥
भक्तनकु तारे कंसनकु मारे । राज दिये उग्रसेना रे । यवनके खातर
द्वारका बसाये । अंत नहीं अस्माना रे ॥१॥ पांडव के कैवारी
कौरवको संहारी । असुरासुरमर्दना रे । यवनकु लेकर मुचकुंद
विवरमें भस्म जिये दुर्जना रे ॥२॥ भक्तनका प्रेम देखे घननील
सुदामनगरीका सोना रे । दास मानिक कहे मधुसूदन जस दिया
अर्जुना रे ॥३॥